ज्वालामुखी योग - 16

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ कुमार **ज्वाला रूप बनकर ज्वाला जगाओ तो जल्दी विनाश हो जायेगा।** ऐसी योग की अग्नि तेज़ करो जो विनाश की ज्वाला तेज़ हो जाएं। (30.11.1979)

➢➢ योग की अग्नि को कैसे तेज करें ?

➳ _ ➳ ज्ञान रुपी घी डालो

→ ज्ञान का आधार योग है... योग का आधार ज्ञान है...

➳ ➳ परमात्म पेम की अग्नि

→ लव में लीन लवलीन अवस्था

→ सांसारिक प्रेम झूठे लगने लगें

- सांसारिक लोगों के लिए तो बहुत रोते हैं
- पर कितने ऐसे हैं जो परमात्म प्रेम में रोते हैं...

➳ _ ➳ वैराग्य की अग्नि

→ धधकता हुआ वैराग हो

→ संसार के सभी राग से मुक्त होना होगा

→ Unnecessary Wasteful Relations से मुक्त होना होगा

➳ _ ➳ पवित्रता की अग्नि

→ अखंडित ब्रह्मचर्य धारण करें

→ Uninterrupted Purity (अबाधित पवित्रता) धारण करें

➳ ➳ लगन की अग्नि

→ तीव्र इच्छा शक्ति से इस पथ पर आगे बढना है

- दिव्य अनुभव प्राप्त करने की लगन हनी चाहिए
- जैसे सांसारिक लोगों को सांसारिक वस्तुएं प्राप्त करने की लगन होती है

➳ _ ➳ त्याग की अग्नि

→ देह के भान का त्याग

- झूठन के झूठन के झूठन का भी झूठ है ये देह

→ देह के संबंधो का त्याग

→ देह के पदार्थो का त्याग

➳ _ ➳ तपो अग्नि / साधना की अग्नि

→ निरंतर स्मृति रहे :- “हम तपस्वी हैं... हमें तपस्या करनी है...”

→ पवित्रता की Maintenance के लिए साधना चाहिये

➢➢ योग का प्रयोग

➳ _ ➳ आत्मा को ज्योत के रूप में देखें ... जिससे आग की लपटें उठ रहे हैं

→ सातो आग्निया मेरे सामने हैं ...

- एक एक ज्वाला मेरी तरफ आ रही है... और मुझे ज्वाला में समा रही है...
- और अब मेरी ज्वाला और भड़कती (तेज) होती जा रही है
- इतनी तेज़ हो गयी है की अब इसे कोई Fire Brigade बुझा नहीं सकता...
- जहां हम खड़े हैं अब वो मधुबन बन गया है....